

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउन्डेशन

ऋग्वेद मंत्र (२.९.५) - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तुति: आचार्य कपिल

सम्पर्क: 8756390767

उभयं ते न क्षीयते वसुव्यं दिवेदिवे जायमानस्य दस्म ।
कृधि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पतिं स्वपत्यस्य रायः ॥

पदार्थ (शब्दार्थ)

उभयम्:	दोनों प्रकार का (दिव्य और भौतिक)।
ते:	तेरा।
न क्षीयते:	नष्ट नहीं होता / कम नहीं होता।
वसुव्यम्:	धन-संपत्ति।
दिवेदिवे:	प्रतिदिन।
जायमानस्य:	प्रकट होने वाले / उत्पन्न होने वाले।
दस्म:	शत्रुओं का नाश करने वाले / अद्भुत कर्म वाले (पर-दुःख भंजक)।
कृधि:	बनाओ / कीजिए।
क्षुमन्तम्:	अन्नवान (अन्न से युक्त) या कीर्तिमान।
जरितारम्:	स्तुति करने वाले (यजमान को)।
अग्ने:	हे अग्नि! (ज्ञान स्वरूप परमात्मा/अग्नि तत्व)।
स्वपत्यस्य:	उत्तम संतान से युक्त।
रायः:	धन का।

भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन

१. सायणाचार्य (आध्यात्मिक-धार्मिक दृष्टिकोण)

सायण के अनुसार, यह मंत्र अग्नि देव की स्तुति में है। वे कहते हैं कि अग्नि का दिव्य और पार्थिव दोनों प्रकार का धन कभी नष्ट नहीं होता। हे अग्नि! आप प्रतिदिन यज्ञ के समय प्रकट होने वाले हैं। अतः आप अपने स्तुति करने वाले यजमान को अन्न और कीर्ति से युक्त करें तथा उसे उत्तम संतानों के साथ धन का स्वामी बनाएं।

२. स्वामी दयानंद सरस्वती (वैदिक-ज्ञानवादी दृष्टिकोण)

स्वामी दयानंद के अनुसार, यह मंत्र मानवीय उन्नति का मार्ग है। उन्होंने 'दस्म' का अर्थ 'पर-दुःख भंजक' (दूसरों के दुखों को दूर करने वाला) किया है। उनका अभिप्राय है कि जो व्यक्ति अग्नि के समान पुरुषार्थी और विद्वान है, उसका धन (पुरुषार्थ) कभी नष्ट नहीं होता। वे ईश्वर/अग्नि से प्रार्थना करते हैं कि हे ज्ञानस्वरूप! मुझे विद्या का प्रशंसक बनाओ, मुझे अन्नादि संसाधनों से समृद्ध करो और मुझे उत्तम संतानों व ऐश्वर्य का स्वामी बनाओ ताकि मैं जगत के दुखों को दूर कर सकूँ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

इस मंत्र का वैज्ञानिक विश्लेषण आधुनिक भौतिकी और ऊर्जा के सिद्धांतों से किया जा सकता है:

- ऊर्जा का संरक्षण (Law of Conservation of Energy):** "उभयं ते न क्षीयते" ऊर्जा के अक्षय होने का सिद्धांत है। अग्नि (ऊर्जा) न तो नष्ट होती है, न ही उत्पन्न की जा सकती है, वह केवल रूप बदलती है। यहाँ अग्नि 'दिव्य' (प्राकृतिक ऊर्जा) और 'भौतिक' (ईंधन) दोनों रूपों में शाश्वत है।
- चक्रण एवं नवीनीकरण (Cycles of Energy):** "दिवेदिवे जायमानस्य" (प्रतिदिन उत्पन्न होने वाला) प्रकृति के चक्रीय स्वरूप को दर्शाता है। जैसे सूर्य की ऊर्जा और पृथ्वी का पारिस्थितिकी तंत्र प्रतिदिन पुनर्नवीनीकरण (Recycle) होता है, वैसे ही ज्ञान और ऊर्जा का निरंतर प्रवाह जीवन को समृद्ध बनाता है।
- सृजनात्मक सामर्थ्य (Biological & Environmental Potential):** "स्वपत्यस्य" का वैज्ञानिक अर्थ है - उत्तम पीढ़ी का पोषण। जब हम अग्नि (ऊर्जा/ज्ञान) का सदुपयोग करते हैं, तो वह हमारी जैविक संतति (Genetics) और पर्यावरणीय संसाधनों (रायः) की गुणवत्ता को सुधारता है।

निष्कर्ष

यह मंत्र केवल एक प्रार्थना नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक प्रबंधन सूत्र (Management Mantra) है। यह हमें सिखाता है कि:

- निरंतर पुरुषार्थ करें (अग्नि की भाँति जलें)।
- अपने संसाधनों (धन और ज्ञान) का संरक्षण करें।
- ज्ञान का विस्तार करें (जरितार) और समाज में दूसरों के दुखों को दूर करने वाला (दस्म) बनें।